फ्रीडम हाउस ने जारी किया प्रेस की स्वतंत्रता का सूचकांक

फ्रीडम हाउस ने वर्ष 2009 की अपनी ताजा रिपोर्ट में प्रेस की स्वतंत्रता का सूचकांक जारी किया है जिसके अनुसार वैश्विक स्तर पर प्रेस की स्वतंत्रता की स्थिति में लगातार सातवें साल गिरावट आई है। यह गिरावट दुनिया के हर हिस्से में दर्ज की गयी है।

फ्रीडम हाउस पिछले तीन दशकों से मीडिया की स्वतंत्रता का आकलन करता आया है। उसकी ओर से हर साल पेश किया जाने वाला वार्षिक सूचकांक बताता है कि किस देश में मीडिया की स्थिति क्या है? प्रत्येक देश को उसके यहाँ प्रेस की स्वतंत्रता के आधार पर 'रेटिंग' दी जाती है। यह 'रेटिंग' तीन श्रेणियों के आधार पर दी जाती है। प्रथम, मीडिया इकाईयाँ किस कानूनी माहौल में करती है! द्वितीय, रिपोर्टिंग और सूचनाओं की पहुँच पर राजनीतिक असर। तृतीय, विषयवस्तु और सूचनाओं के प्रसार पर आर्थिक दबाव।

वर्ष 2009 की रिपोर्ट में गतवर्ष 2008 की स्थिति के आधार पर 195 देशों में प्रेस की स्थिति का आकलन किया गया। इसमें केवल 70 देश ही ऐसे पाए गये हैं जहाँ प्रेस की स्थिति स्वतंत्र मानी गई है। यह कुल देशों का महज 36 फीसदी है। आंशिक मीडिया स्वतंत्रता वाले देशों की संख्या 61 है। 64 देश ऐसे हैं जहाँ प्रेस को कोई स्वतंत्रता नहीं है। अगर आबादी के हिसाब से देखें तो केवल 17 प्रतिशत आबादी उन देशों में निवास करती है जहाँ मीडिया स्वतंत्र रूप से कार्य करता है। फ्रीडम हाउस ने दुनिया को छह हिस्सों में बाँटकर अपना अध्ययन किया और पाया कि प्रत्येक क्षेत्र में मीडिया की स्वतंत्रता की स्थिति में गिरावट आयी है। पश्चिमी यूरोप में प्रेस की स्वतंत्रता की स्थिति अन्य तमाम क्षेत्रों की तुलना में बेहतर रही है। फ्रीडम हाउस की रिपोर्ट में भारत सूचकांक के अनुसार वर्ग दो श्रेणी में रखा गया है जिसमें 61 देश शामिल हैं। इस श्रेणी में भारत 36वें नंबर पर है।

दुनिया का सबसे पुराना कैम्ब्रिज प्रेस विवादों में

दुनिया का सबसे पुराना कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस अपने 150 कर्मचारियों की हटाने की योजना के चलते विवादों में आ गया है। प्रेस प्रबंधन ने तय किया है कि प्रकाशन का काम परम्परागत लिथोग्राफी तकनीक के बजाय डिजिटल तकनीक से होगा। इस परिर्वतन के चलते प्रबंधन 150 कर्मचारियों को हटाने की योजना बना रहा है।

कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस की स्थापना आज से लगभग चार सौ पच्चीस वर्ष पूर्व हेनरी अष्टम के चार्टर के तहत की गयी थी। तब से अब तक कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस में विख्यात अंग्रेजी कवि जॉन मिल्टन और आइजक न्यूटन से लेकर हाल के वैज्ञानिक स्टीफन हाकिंग की कृतियों का प्रकाशन किया है। यूनिवर्सिटी की 800 वीं

वर्षगांठ के अवसर पर इस साल आयोजित होने वाले विशेष कार्यक्रमों में प्रेस की अहम भूमिका तय की है।

कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस वस्तुतः एक लोकोपकारी संस्थान है, जिसकी देखरेख यूनिवर्सिटी के विभिन्न 18 विभागों के शीर्षस्थ लोगों को लेकर बनाये गये एक सिंडिकेट द्वारा की जाती है। कर्मचारियों को हटाये जाने की खबर के बाद इससे प्रभावित होने वाले लोगों ने इस मसले को सिंडिकेट के सामने रखने का निष्चय किया है। कर्मचारी संघ के प्रतिनिधियों का उम्मीद है कि प्रबंधन उनकी बातों को सुनने के बाद कोई उचित रास्ता निकालेगा। प्रेस के कार्पोरेट मामलों में निदेशक पीटर डेविसन के अनुसार अगले तीन साल में वार्षिक दो मिलियन पाउंड के नुकसान के आकलन के कारण हमें यह कदम उठाना पड़ा। वर्तमान में प्रेस में एक हजार स्थानीय तथा आठ सौ बाहरी लोग कार्यरत हैं।

ब्रिटिश मीडिया पर मीडिया स्टैंडर्ड्स ट्रस्ट की रिपोर्ट

ब्रिटिश मीडिया के गिरते स्तर और कम होती विश्वसनीयता पर ब्रिटेन की स्वायत्त संस्था मीडिया स्टैंडर्ड्स ने एक रिपोर्ट जारी की है। पुर्तगाल में दो वर्ष पूर्व एक ब्रिटिश लड़की के गुम हो जाने की घटना के मीडिया कवरेज को इस रिपोर्ट का आधार बनाया गया है।

मीडिया स्टेंडर्डस् ट्रस्ट की यह रिपोर्ट इसलिए चर्चा में है क्योंकि फाइनेंशियल टाइम्स ग्रुप में चैयरमेन सर डेविड बैल इस स्वायत्त संस्था के चेयरमेन हैं। आज से दो वर्ष पूर्व ब्रिटेन से पुर्तगाल अपने माता पिता के साथ घूमने गयी चार वर्षीय लड़की मैजलिन मैक्कन खो गयी थी। यह घटना कई दिनों तक ब्रिटिश मीडिया में शीर्ष पर रही। रिपोर्ट के मुताबिक इस घटना की रिपोर्टिंग विवादास्पद होने के साथ-साथ आपत्तिजनक भी थी। ट्रस्ट के अनुसार मीडिया रिपोटर्स ने गॉसिप और तुक्कों पर आधारित गैर जिम्मेदाराना रिपोर्टिंग इसलिए की क्योंकि वे संपादकों के दबाव में थे। इस शोध में शामिल वेस्ट मिनिस्टर यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर ऑफ कम्युनिकेशन स्टीवन बारनेट ने टिप्पणी की है कि जो पत्रकार इस घटना की रिपोर्टिंग के लिये पुर्तगाल भेजे गये थे, उन्हें संपादकों की तरफ से साफ निर्देश दिये गये थे कि उन्हें हर रोज एक एक्सक्लूसिव स्टोरी भेजनी है। पत्रकार बिरादरी अब इस रिपोर्ट का स्वागत कर रही है। इसी आधार पर नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट ने अपनी बरसों पुरानी माँग को दोहराया है कि पत्रकार को किसी स्टोरी को कवर करने से इंकार करने का अधिकार दिया जाना चाहिए।

विश्वविख्यात फिल्म प्रशिक्षण संस्था स्ट्रासबर्ग की शाखा भारत में

दुनिया भर में प्रतिष्ठित फिल्म प्रशिक्षण संस्था स्ट्रासबर्ग शीघ्र ही भारत में अपनी शाखा खोलने जा रही है। ली स्ट्रासबर्ग थिएटर एण्ड फिल्म इंस्टीट्यूट की भारतीय शाखा अमेरिका में बसे सफल भारतीय व्यवसायी अहमद शेख के प्रयासों से प्रारंभ होने जा रही है। स्ट्रासबर्ग की भारतीय शाखा फिल्मकार राहुल रवैल के देखरेख में प्रारंभ होगी। ली स्ट्रासबर्ग पहली बार अमेरिका के बाहर किसी संस्था

The LEE STRASBERG
THEATRE & FILM INSTITUTE

के सहयोग से अपनी शाखा खोल रहे हैं। ली स्ट्रासबर्ग थिएटर एण्ड फिल्म इंस्टीट्यूट अमेरिका में विगत 60 वर्षों से स्थापित है जो अनेक प्रतिभाशाली सितारे दे चुका है। हॉलीवुड के प्रख्यात अभिनेता मेर्लिन ब्रेंडो तथा अभिनेत्री मर्लिन मुनरो इस संस्थान के विद्यार्थी रहे हैं। की प्रसिद्ध अभिनेत्री एंजेलिना जोली भी ली स्ट्रासबर्ग की देन है। आज भारत में युवाओं की आबादी कुल आबादी का 40 प्रतिशत है। इसे देखते हुए अनके प्रतिष्ठित संस्थाएं अपनी शाखाएँ भारत में खोल रही हैं। ली स्ट्रासबर्ग द्वारा भारत में अपना संस्थान प्रारंभ करने की घोषणा का भारतीय फिल्म उद्योग ने जोरदार स्वागत किया है।

भारतीय बाजार में नजर आएगी फोर्ब्स पत्रिका

अंतर्राष्ट्रीय स्तर के दो मुख्य प्रकाशन वॉल स्ट्रीट जर्नल एवं फोर्ब्स पत्रिका जल्दी ही भारतीय बुक स्टालों पर नजर आयेंगे। शीघ्र ही इनका प्रकाशन भारत में प्रारंभ होने के साथ ही इसकी प्रसार संख्या में बढ़ोत्तरी की उम्मीद की जा रही है। वॉल स्ट्रीट जर्नल के भारतीय संपादक एवं प्रकाशक सुनम दुबे के अनुसार हमारे लिए वर्तमान आर्थिक परिस्थितियाँ चुनौतीपूर्ण हैं फिर भी हमें उम्मीद है कि जैसे ही आर्थिक परिस्थितियों में सुधार आएगा, वैसे ही भारत में वॉल स्ट्रीट जर्नल के लिए अवसरों की भरमार हो जाएगी, क्योंकि भारतीय करोबारी वैश्विक निवेश समाचारों में बहुत दिलचस्पी लेते हैं।

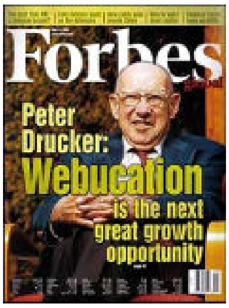

भारत में फोर्ब्स पत्रिका के प्रकाशन के लिए टीवी-18 के साथ समझौता किया है। भारतीय बाजार में टीवी-18 फोर्ब्स की पचास हजार कॉपियाँ प्रिंट करेगी। अमेरिका में इस प्रतिष्ठित बिजनेस पत्रिका की नौ लाख कापियाँ बेची जाती हैं। नेटवर्क 18 ग्रुप के मुख्य कार्यकारी अधिकारी हरीश चावला के अनुसार भारत के फोर्ब्स पत्रिका प्रकाशन के लिए 50 लोगों की एक टीम बनायी जायेगी और इसमें भारतीय तथा अतंरराष्ट्रीय स्तर की बेहतर बिजनेस जानकारी प्रकाशित की जायेगी। विश्लेषकों का मानना है कि फोर्ब्स पत्रिका की कीमत भारतीय पत्रिकाओं बिजनेस टुडे, बिजनेस वर्ल्ड, बिजनेस इंडिया से बहुत अधिक होगी फिर भी यह इन पत्रिकाओं की कड़ी चुनौती देगी।

अमेरिकी महिला पत्रकार को 12 साल की सजा

अमेरिका की दो महिला पत्रकारों को उत्तर कोरिया में 'संगीन अपराध' तथा 'देश में गैर कानूनी प्रवेश' के मामले में श्रम शिविर में 12 वर्ष तक रहने की सजा सुनाई गई है। जानकारी के मुताबिक प्योंगयांग स्थित सेंट्रल कोर्ट ने चीनी मूल की अमेरिकी पत्रकार लॉरा लिंग और कोरियाई मूल की अमेरिकी पत्रकार इयुना ली को पाँच दिन तक चली सुनवाई के बाद सजा सुनाई।

यह फैसला उस समय आया है जब परमाणु परीक्षण करने की वजह से उत्तर कोरिया को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर घोर आलोचना का सामना करना पड़ रहा है। कुछ पर्यवेक्षकों ने इन दोनों को 10 वर्ष की सजा मिलने का अनुमान लगाया था लेकिन इन्हें इससे भी कठोर सजा दी गई। गौरतलब है कि लिंग और ली को चीन-उत्तर कोरिया की सीमा से 17 मार्च, 2009 गिरफ्तार किया गया था। अमेरिका इन पत्रकारों को रिहा किए जाने की माँग करता रहा है। लेकिन उत्तर कोरिया ने इस को नजरअंदाज करते हुए महिला पत्रकारों को सजा देने का फैसला कर दिया है। पिछले दिनों महिला पत्रकारों की रिहाई की माँग को लेकर दक्षिण कोरिया में प्रदर्शन किए थे लेकिन उत्तर कोरिया अपने रुख पर अड़ा रहा है।

ईरान ने विदेशी मीडिया पर प्रतिबंध

हाल ही में ईरान में हुए चुनावों के बाद विरोध प्रदर्शनों तथा सरकार की भूमिका को लेकर विदेशी मीडिया की नकारात्मक खबरों के बाद वहाँ सरकार ने अब विदेशी मीडिया खासकर टीवी चैनलों पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिए है। ईरानी सरकार के आदेश के बाद सउदी अरब से चलने वाले टीवी चैनल अल अरबिया ने अगले ओदश तक अपना तेहरान ब्यूरो कार्यालय बंद कर दिया है। बीबीसी ने भी इस बात की पुष्टि कर दी है कि ईरान ने उसके संवाददाता को देश छोड़ने के लिए कहा है।

चुनाव के बाद से अब तक ईरान में कई सुधारवादी विचारधारा वाले अखबारों को बंद कर दिया गया है। कई सुधारवादी लेखक और संपादकों को जेल भेज दिया गया, यहाँ न्यायपालिका ने भी मीडिया पर नकेल कसने की वकालत की है। सरकार ने छपने से ज्यादा प्रसारण होने वाली चीजों पर नकेल कस रखी है और विदेश से प्रसारित होने वाली खबरों पर कड़ी नज़र रखी जा रही है।

डॉ. पवित्र श्रीवास्तव